प्रा. डॉ. प्रभाकर पां. पाठक
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
दयानंद महाविद्यालय, सोलापूर
दिनांक २७-६-१९८८

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर की एम.फिल (हिंदी) परीक्षा के लिए

सौ. शोभा कुलकर्णी - [redacted] ने

मेरे निर्देशन में " कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के काव्य में युगचेतना " शीर्षक प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध पूरा किया है । परीक्षार्थी की यह मौलिक कृति है ।

मैं संस्तुति करता हूँ कि इसे परीक्षाहेतु अग्रेषित किया जाए।

PRINCIPAL
[illegible] FATEHCHAND
DAYANAND COLLEGE OF ARTS AND SCIENCE SHOLAPUR

प्र.पां.पाठक
शोध-निर्देशक

प्राक्कथन

प्रा क्क थ न ......

००

हिंदी साहित्याकाश में कवि रामधारी सिंह ' दिनकर ' का स्थान एक महत्त्वपूर्ण नक्षत्र का है । एक महाकवि की प्रतिभा लेकर जन्मे हुए दिनकर ने अपने युग की सभी समस्याओं के प्रति सजगता प्रकट की है ।

यों तो हिंदी के इस महान सपूत कवि दिनकर के व्यक्तित्व और कृतित्व पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है, लेकिन उनके काव्य में युगीन चेतना के संदर्भ में अभी तक विचार नहीं हो पाया था । अलग अलग रूप से कुछेक प्रयास हुए हैं । इसी अभाव की पूर्ति की दिशा में प्रस्तुत लेखिका ने इस लघु शोध-प्रबंध द्वारा विनम्र प्रयास किया है ।

समय की पाबंदी और लेखिका की मर्यादा को ध्यान में रखकर'कवि रामधारी सिंह ' दिनकर ' के काव्य में युगचेतना' विषय के लिए दिनकर जी की ' रेणुका ', ' हुंकार ', ' रश्मिरथी ', ' कुरुक्षेत्र ' और ' उर्वशी ' ये प्रमुख पाँच रचनाओं का आधार लेना ही समीचीन समझा गया है ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के विषय का चयन कराने में आदरणीय निर्देशक महोदय प्रा. डॉ. प्रभाकर पाठक ने सहायता की और इच्छित विषय चुन लेने पर मैंने मनोयोग से वर्षभर कार्य किया । उनकी युग चेतना को ऊपर निर्देशित काव्य संदर्भों में खोजने का विनम्र प्रयास प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के माध्यम से किया है ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में प्राक्कथन और उपसंहार के अतिरिक्त सात

अध्याय हैं ।

प्रथम अध्याय है'युगीन चेतना - स्वरूप विवेचन' शीर्षक का । इसमें चेतना शब्द की व्युत्पत्तिमूलक व्याख्या , युगीन चेतना की परिभाषा, स्वरूप और विविध क्षेत्र तथा हिंदी साहित्य में युगीन चेतना का विकास आदि का विवेचन प्रस्तुत किया गया है ।

'दिनकर की जीवनी और व्यक्तित्व' शीर्षक द्वितीय अध्याय में कवि का संक्षिप्त जीवन परिचय एवं कृतित्व का विवेचन प्रस्तुत किया गया है। जीवन परिचय में जन्म तथा परिवार , व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू, व्यक्तित्व पर अन्य प्रभाव आदि का विवेचन किया गया है । कृतित्व परिचय के अंतर्गत कवि द्वारा रचित काव्य कृतियों का प्रवृत्तिमूलक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसी अध्याय के समापन भाग में दिनकर काव्य की युगीन पृष्ठभूमि का निरूपण किया गया है । इसके अंतर्गत राजनीतिक , सामाजिक, धार्मिक सांस्कृतिक , साहित्यिक परिस्थिति का विवेचन किया गया है । द्वितीय अध्याय पूर्णत: परार्जित है । दिनकर पर लिखी हुई अन्य लेखकों की रचनाओं के आधार पर द्वितीय अध्याय लिखा गया है ।

' राजनीतिक चेतना ' शीर्षक तृतीय अध्याय में दिनकर के चुने हुए काव्यों में राजनीतिक चेतना के विविध आयामों को दर्शाया गया है । प्रथमत: राजनीतिक चेतना के स्वरूप को स्पष्ट किया है, बाद में आधुनिक काव्य में राजनीतिक चेतना के विकास का विवेचन प्रस्तुत किया गया है । उसके उपरांत दिनकर का राजनीतिक दृष्टिकोण उनकी ही रचना के आधार पर स्पष्ट किया है । राजनीतिक चेतना के दो आयाम प्रकट किए गए हैं । वे आयाम हैं -- गांधी नीति का विरोध, क्रांति का स्वर । निष्कर्ष के अंतर्गत दिनकर के काव्य में निरूपित राजनीतिक चेतना संबंधी मत-प्रतिपादन किया है ।

' सामाजिक चेतना ' शीर्षक चतुर्थ अध्याय में दिनकर के चुने हुए काव्यों में से सामाजिक चेतना के विविध आयामों को दर्शाया गया है । प्रथमत: सामाजिक चेतना के स्वरूप को स्पष्ट किया है बाद में आधुनिक काव्य में सामाजिक चेतना के विकास का विवेचन प्रस्तुत किया गया है । उसके उपरांत दिनकर का सामाजिक दृष्टिकोण उनकी ही रचना के आधार पर स्पष्ट किया है । सामाजिक चेतना के चार आयामों को दर्शाया गया है । ये आयाम हैं-- वर्गभेद, वर्णभेद, नारी-शोषण, मानवतावादी विचार आदि । निष्कर्ष के अंतर्गत दिनकर के काव्य में निरूपित सामाजिक चेतना संबंधी मत प्रतिपादन किया है ।

' धार्मिक चेतना ' शीर्षक पंचम अध्याय में दिनकर के चुने हुए काव्यों में धार्मिक चेतना के विविध आयामों को दर्शाया गया है । प्रथमत: धार्मिक चेतना का स्वरूप स्पष्ट किया है बाद में आधुनिक काव्य में धार्मिक चेतना के विकास का विवेचन प्रस्तुत किया गया है । उसके उपरांत दिनकर का धार्मिक दृष्टिकोण उनकी ही रचना के आधार पर स्पष्ट किया है । उसमें तीन पहलू दिखाए गए हैं । वे इस प्रकार हैं -- दार्शनिक, रहस्यवादी, आध्यात्मिक । दिनकर की धार्मिक चेतना के विविध आयामों को दर्शाया गया है । ये आयाम हैं-- संन्यास का विरोध, भाग्यवाद का खंडन, कर्मवाद का समर्थन, आत्मानंद की प्राप्ति , नए धर्म का प्रतिपादन, कामाध्यात्म आदि । निष्कर्ष के अंतर्गत दिनकर की धार्मिक चेतना संबंधी मत-प्रतिपादन किया है ।

' सांस्कृतिक चेतना ' शीर्षक षष्ठ अध्याय में दिनकर के चुने हुए काव्यों में सांस्कृतिक चेतना के प्रमुख आयामों को दर्शाया गया है । प्रथमत: सांस्कृतिक चेतना का स्वरूप स्पष्ट किया है , बाद में आधुनिक काव्य में सांस्कृतिक चेतना के विकास का संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत किया गया है । उसके उपरांत

दिनकर का सांस्कृतिक दृष्टिकोण उनकी ही रचना के आधार पर स्पष्ट किया है । सांस्कृतिक चेतना का दर्शन जिन दो आयामों में स्पष्ट किया गया है - वे आयाम हैं-- अतीत वर्णन और सांस्कृतिक आदर्श । निष्कर्ष के अंतर्गत दिनकर की सांस्कृतिक चेतना संबंधी मत प्रतिपादन किया गया है ।

' साहित्यिक चेतना ' शीर्षक सप्तम अध्याय में शिल्पविधान के तत्त्वों पर ही विचार किया गया है । प्रथमत: साहित्यिक चेतना का संक्षिप्त परिचय दिया गया है । तदनंतर आधुनिक काव्य में साहित्यिक चेतना के विकास का विवेचन प्रस्तुत किया गया है । उसके उपरांत दिनकर का साहित्यिक दृष्टिकोण उनकी ही रचना के आधार पर स्पष्ट किया है । दिनकर का विषय-चयन (भावपक्ष) राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक चेतना के संदर्भ में स्पष्ट हुआ है । यहाँ इस अध्याय में कलापक्ष पर ही विचार किया गया है । काव्य के तत्त्व , काव्य प्रयोजन, छंद, काव्यभाषा संबंधी दिनकर की साहित्यिक चेतना संबंधी मत-प्रतिपादन किया है ।

उपसंहार के अंतर्गत सभी अध्यायों का सारांश और निष्कर्ष का विवेचन किया गया है ।

आभार तथा कृतज्ञता ज्ञापन

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के लेखन में मुझे जिनसे सहयोग मिला उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना पुनीत कर्तव्य मानती हूँ । सर्वप्रथम तो मैं उन समस्त लेखकों के प्रति आभार प्रकट करती हूँ, जिनकी रचनाओं का उपयोग मैंने सहायक ग्रंथों के रूप में किया है । इस लेखन में मेरे प्रथम गुरु सौ. राजेश्वरी आपटे का सहयोग मिला । उनके प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध श्रद्धेय गुरुवर डॉ. प्रभाकर पाठक , अध्यक्ष ,

हिंदी विभाग, दयानंद महाविद्यालय के विद्वत्तापूर्ण निर्देशन में लिखा गया है। परमादरणीय डॉ. पाठक ने इस लघु शोध-प्रबंध के लेखन के प्रत्येक चरण पर अत्यंत आत्मीय भाव से मुझे मार्गदर्शन दिया है । श्रद्धेय गुरुवर डॉ.पाठक जी की मैं अत्यंत कृतज्ञ हूँ और श्रद्धावनत होकर उनके आशीर्वाद की कामना करती हूँ ।

प्राचार्य दयानंद महाविद्यालय, प्राचार्य वालचंद महाविद्यालय , दोनों महाविद्यालयों के ग्रंथपाल तथा उनके अन्य सहयोगियों के प्रति आभारी हूँ ।

सोलापूर ,   विनीत,

शोभा कुलकर्णी

दिनांक : ३० - ६ - ८८   (सौ. शोभा कुलकर्णी -देशपांडे)

विषय सूची

वि ष य - सू ची

क्रम	विषय		पृष्ठ-संख्या
	प्राक्कथन	..	१ से ५
१.	प्रथम अध्याय : युग-चेतना स्वरूप विवेचन	..	१ से ७
	चेतना शब्द की उत्पत्तिमूलक व्याख्या, परिभाषा , युगीन चेतना स्वरूप , युगीन चेतना के विविध क्षेत्र , व्यक्ति चेतना और युगीन चेतना, हिंदी साहित्य में युगीन चेतना ।		
२.	द्वितीय अध्याय : दिनकर की जीवनी और व्यक्तित्व		८ से २४
	जन्म तथा परिवार , व्यक्तित्व , व्यक्तित्व पर प्रभाव , शिक्षा, दिनकर की रचनाएँ - संक्षिप्त परिचय ,दिनकर-काव्य की युगीन पृष्ठभूमि - राजनीतिक, सामाजिक,धार्मिक, सांस्कृतिक , साहित्यिक ।		
३.	तृतीय अध्याय : राजनीतिक चेतना		२५ से ५८
	राजनीतिक चेतना : स्वरूप , आधुनिक काव्य में राजनीतिक चेतना, दिनकर का राजनीतिक दृष्टिकोण , दिनकर की राजनीतिक चेतना, क्रांति का स्वर , गांधी-नीति का विरोध, निष्कर्ष ।		

..

क्रम	विषय	पृष्ठ-संख्या
४.	चतुर्थ अध्याय : सामाजिक चेतना ..	५९ से ९४
	सामाजिक चेतना स्वरूप, आधुनिक काव्य में सामाजिक चेतना, दिनकर का सामाजिक दृष्टिकोण, दिनकर की सामाजिक चेतना - वर्गभेद, वर्णभेद, नारी-शोषण , मानवतावादी विचार , निष्कर्ष ।	
५.	पंचम अध्याय : धार्मिक चेतना ..	९५ से १२२
	धार्मिक चेतना स्वरूप , आधुनिक काव्य में धार्मिक चेतना, दिनकर का धार्मिक दृष्टिकोण , दिनकर की धार्मिक चेतना - संन्यासविरोध, भाग्यवाद का खंडन, कर्मवाद का समर्थन,आत्मानंद की प्राप्ति , नर धर्म का प्रतिपादन, कामाध्यात्म , निष्कर्ष ।	
६.	षष्ठ अध्याय : सांस्कृतिक चेतना ..	१२३ से १३७
	सांस्कृतिक चेतना स्वरूप , आधुनिक काव्य में सांस्कृतिक चेतना, दिनकर का सांस्कृतिक दृष्टिकोण , दिनकर की सांस्कृतिक चेतना, अतीत वर्णन , सांस्कृतिक आदर्श , निष्कर्ष ।	
७.	सप्तम अध्याय : साहित्यिक चेतना ..	१३८ से १५४
	साहित्यिक चेतना स्वरूप , आधुनिक काव्य में साहित्यिक चेतना,	

..

क्रम	विषय	पृष्ठ-संख्या
	दिनकर का साहित्यिक दृष्टिकोण, दिनकर की साहित्यिक चेतना - दिनकर के काव्य तत्त्व संबंधी, प्रयोजन संबंधी छंद - संबंधी, काव्य-भाषा संबंधी विचार , निष्कर्ष ।	
८.	उ प सं हा र	१५५ से १६३
९.	आधार एवं संदर्भ-ग्रंथ सूची	१६४ से १६५

||||